



Aug. 2020



## स्वतंत्रता दिवस पर एसआरएमएस के संस्थानों में फृहस्या दिखेगा **PAGE 8**

- राष्ट्र धर्म के लिए राम मूर्ति जी ने सही धोर यातनाएं- **PAGE 3**
- कोविड मरीजों की कलाइयों पर सजी राखी- **PAGE 4**
- एसआरएमएस में कोविड मरीजों की प्लाज्मा थेरेपी- **PAGE 6**
- कोविड के डर पर भारी पड़ा सेवा का ज़ब्बा- **PAGE 9**
- पुरस्कृत कहानी- 'अंतहीन'- **PAGE 14**

# RADHA MEDICAL AND SCIENTIFIC

E1 225, Rajendra Nagar, Bareilly.

★ 24 years of Excellence

★ Speciality in Oncology and ICU Drugs

Established  
in 1996

Deals with :-



FRESENIUS  
KABI



HETERO

&  
Many  
Others

## MR. AMRISH SEHGAL



+91 97607 17010

+91 9410655864



amrishi sehgal1225@gmail.com

radhamedicalscientific@rediffmail.com



आयुष्मान योजना के अंतर्गत  
निःशुल्क कैंसर का इलाज उपलब्ध है

④ 9412761887, 9458702257

## कैंसर सेंटर

विश्वस्तरीय टैक्नोलॉजी द्वारा कैंसर ट्रीटमेंट



रेडियोथेरेपी लीनियर एक्सीलेरेटर

## TRUE BEAM

IMRT • IGRT • SRT • SRS • SBRT  
रेस्प्रेटरी गेटिंग • रैपिड आर्क

अन्य इलाज की सुविधायें

विश्वस्तरीय हाइटेक मशीन द्वारा क्षेत्र में पहली बार, कैंसर सर्जरी के दौरान ही एक ही बार में  
हाईपरथर्मिक पैरीटोनियल कीमोथेरेपी (HIPEC) की सुविधा • समस्त कैंसर सर्जरी

• कीमोथेरेपी • टारगेट थेरेपी • इम्यूनोथेरेपी • हार्मोनल थेरेपी

कैंसर की जाँचें

पैट-सी.टी. स्कैन • गामा कैमरा • 128 स्लाइस ड्यूल सोर्स सी.टी. स्कैन  
3.0 टैस्ला एम.आर.आई • मैमोग्राफी • हिस्टोपैथोलॉजी • इम्यूनोहिस्टोकैमेस्ट्री (ट्यूमर मारकस)

## यादगार रहेंगे त्यौहार :

कोविड महामारी के दौरान पड़ने वाले त्यौहार आजीवन लोगों को याद रहेंगे। चाहें वह आजादी का पर्व स्वतंत्रता दिवस हो, ईद या रक्षाबंधन। हर्ष और उल्लास के साथ एक दूसरे को बधाई देते थे यह सभी त्यौहार भी कोविड को बजह से खामोशी से निकल गए। भारत माता की जय जयकार भी मुंह पर लगे मास्क के बीच दम तोड़ गई। ईद की मुबारकबाद भी गले मिलने को तरसी और रक्षाबंधन पर भाइयों की कलाइयों को बहनों का प्यार नहीं मिला। यह त्यौहार सबसे ज्यादा सूने तो उनके लिए रहे जो कोविड संक्रमित होने के बाद अस्पतालों में उपचाराधीन थे। उनके लिए न ईद मुबारक बोलने वाले अपनों का साथ था और न राखी बांधने के बाद नेंग मांगने वाली बहन की शरारत। हालांकि एसआरएमएस मेडिकल कालेज ने अपने यहां भर्ती मरीजों के लिए त्यौहार यादगार करने की बड़ी पहल की। पहले ईद मनाने वाले मरीजों को कुर्ता-पजामा, तस्बी, टोपी और खजूर गिफ्ट में दिए गए। खाने के मेन्यू में सिवडियों को विशेष से रखा। इसी तरह रक्षाबंधन पर मरीजों और क्वारंटीन स्टाफ को राखी बांधी गई। गिफ्ट भी दिए गए। निसंदेह एसआरएमएस में मनाए गए यह त्यौहार क्वारंटीन स्टाफ और मरीजों को आजीवन याद रहेंगे।

जय हिंद

### अमृत कलश



“अच्छे काम करते रहिये चाहे लोग तारीफ करें या न करें आधी से ज्यादा दुनिया सोती रहती है ‘सूरज’ फिर भी उगता है।”

### EDITORIAL TEAM

Amit Awasthi	- Editor
Rishabh Tiwari	- Correspondent
Indu Dixit	- Photographer
Yasmeen Khan	- Designer
Vineet Sharma	- (Co-Ordinator, IMS)
Vijai Sharma	- (Co-Ordinator, CET)
Dr. Ekta Rastogi	- (Co-Ordinator, IBS)

Mail us: amit.awasthi@srms.ac.in, www.srms.ac.in  
13 km., Ram Murti Puram, Bareilly-Nainital Road, Bhojipura, Bareilly (U.P.) Mob.: 9458706090

# राष्ट्रधर्म के लिए सही घोर यातनाएं



कांग्रेस के आला नेताओं के साथ स्वतंत्रता सेनानी बाबू जी राम मूर्ति जी

स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति जी ने महात्मा गांधी के आहवान पर विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, असहयोग और अंदोलन का सफलतापूर्वक संचालन किया। भारत छोड़ो अंदोलन के फैसले का भी उन्होंने समर्थन किया। इस फैसले से नाराज अंग्रेज सरकार ने एक अगस्त 1942 को राम मूर्ति जी को गिरफ्तार कर लिया। स्वतंत्रता सेनानी को ढाई साल काल कोठरी की भीषण मस्जा मुनाई। अंधकार से भरी उनकी कोठरी में रोशनी के लिए सिर्फ एक छिद्र रखा गया। जिससे दिन और रात का अहसास हो। खाने का सामान रखने के लिए भी मिट्टी के सिर्फ दो बर्तन दिए गए। दैनिक क्रियाएं भी इन्हीं से निपटानी होती थीं। उन्हें परेशान करने के लिए अंग्रेज अफसर उनकी कोठरी में कई बार गंदा मैला तक डाल देते थे। इसके बाद भी राम मूर्ति जी ने मांफी नहीं मांगी। घोर यातनाओं के बाद भी वे राष्ट्रधर्म और समाज धर्म से टस से मस नहीं हुए। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने कर्तव्य को बड़ा समझा। आखिरकार अंग्रेजों को उन्हें छोड़ना पड़ा।

### Vision

- To be partner in building India a world leader in Medical Education & Health Care.
- To establish & develop world class self reliant institute for imparting Medical and other Health Science education at under-graduate, post-graduate & doctoral levels of the global competence.
- To serve & educate the public, establish guidelines & treatment protocols to be followed by treating hospitals.
- To provide quality & affordable health care facilities and services to all sections of society.



### Mission

- To strive incessantly to achieve the goals of the Institution.
- To impart academic excellence in Medical Education.
- To practice medicine ethically in line with the global standard protocols.
- To evolve the Institution to the status of a Deemed University.
- Our Students - Our Assets.
- Our Staff - Our Means.

### Values

Integrity	Excellence
Fairness	Innovativeness

# कोविड मरीजों की कलाइयों पर सजी राखी



अतीफ खान (कोविड मरीज)



- रक्षाबंधन पर मरीजों को एसआरएमएस ने दिया तोहफा, चॉकलेट भी बांटी
- उपचार में लगे डाक्टर और अन्य स्टाफ को भी नहीं खली बहनों की कमी
- नर्स, पैरामेडिकल व अन्य स्टाफ में शामिल महिलाओं को दिया गया गिफ्ट
- कोविड मरीजों की सेवा में ड्यूटी कर रहीं सफाई कर्मियों को दिया गया सूट

**बरेली:** एसआरएमएस में कोविड संक्रमित और संदिग्ध मरीजों के साथ उनका इलाज कर रहे डाक्टर और सेवा में लगे स्टाफ की कलाइयां रक्षाबंधन पर खाली नहीं रहीं। उनकी कलाइयों पर राखी बांधी गई और मुंह मीठा कराने के लिए चाकलेट भी दी गई। मेडिकल कालेज प्रबंधन की ओर से रक्षाबंधन को यादगार बनाने के लिए किए गए इंतजाम को सभी मरीजों और स्टाफ ने समर्पण किया। कोविड पाजिटिव अतीफ खान ने इसे न भूलने वाला तोहफा करार दिया। उन्होंने इस मौके पर राखी बांधने वाली बहनों और उनके भाइयों को कोविड से सेफ रहने की दुआ भी मांगी।

एसआरएमएस मेडिकल कालेज के कोविड वार्ड में भर्ती मरीजों के लिए रक्षाबंधन का दिन भी आम दिनों की तरह ही था, लेकिन सुबह आठ बजे ड्यूटी बदलने के बाद नया स्टाफ जब अंदर पहुंचा तो दिन सभी के लिए खास हो गया। थाली में राखियां और चाकलेट लेकर अंदर आए स्टाफ ने मरीजों को रक्षाबंधन की बधाई दी और राखियां बांधने की बात कही। मरीज नरेंद्र की कलाई पर उनकी बहन द्वारा भेजी राखी बांधी गई। इसके बाद सभी मरीजों की कलाइयों पर एक एक कर राखियां सज गईं। सेमीप्राइवेट वार्ड में कोविड पाजिटिव अतीफ खान ने भी राखी बांधते स्टाफ में शामिल बहनों को पास बुलाया। हाथ आगे किया और राखी बांधने की गुजारिश की। उन्होंने कहा कि करीब सात-आठ साल बाद फिर से राखी बंधवाने का मौका मिला है। पहले मैं

अपनी मुंहबोली बहन से राखी बंधवाता था, लेकिन उसका ट्रांसफर राजस्थान हो गया। तब से रक्षाबंधन पर कलाई सूनी रह जाती है। आज राखी बंधती देख खुद को नहीं रोक पाया। उन्होंने सभी बहनों और उनके भाइयों को कोविड से सेफ रहने की दुआ मांगी। कहा कि घर से काफी दूर राखी बांधते देख पारिवारिक फीलिंग हुई। भावुक हो गया हूं। यहां का स्टाफ बेहद कोआपेटिव है। कछुऐसी ही फीलिंग अमित शर्मा, ऋषभ सिंह, प्रशांत, विपिन कुमार, अमोल भसीन, सुशील टंडन, हरीश गंगवार, शुभम चौहान, अरुण कुमार, विनोद बिहारी, नरेंद्र कुमार, रामनरेश मिश्रा, सुरेंद्र कुमार रस्तोगी की भी रही। सभी ने रक्षाबंधन पर कलाई सूनी न रहने देने के लिए एसआरएमएस का आभार जताया। मरीजों के साथ ही उनके उपचार में लगे डाक्टर, पैरामेडिकल, टेक्निकल व अन्य स्टाफ में शामिल 105 पुरुषों को भी राखियां बांधी गईं। चाकलेट से सभी का मुंह मीठा कराया गया। 134 महिला स्टाफ को गिफ्ट और सूट दिए गए।

मेडिकल कालेज के डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति ने कहा कि कोविड 19 से संक्रमित और संदिग्ध मरीज मजबूरी में त्यौहार पर भी घरों से दूर हैं। ऐसे में उन्हें सहारे की जरूरत है। इसीलिए उनके साथ रक्षाबंधन मनाने का फैसला किया गया। उन्हें बहनों की कमी न खले और त्यौहार पर अकेलापन न महसूस हो। इसीलिए सभी की कलाई पर राखी बांधने का फैसला किया। दो दिन पहले ईद पर भी मरीजों के खाने में विशेष रूप से सिंवइयां रखी गई थीं।



HAPPY  
RAKSHA BANDHAN



विनोद बिहारी (कोविड मरीज)

# एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज के कोविड वार्ड में उपचार करते डॉ. ललित सिंह



एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज के कोविड वार्ड में उपचार करते डॉ. ललित सिंह

**बरेली:** शासन ने एसआरएमएस मेडिकल कालेज को प्लाज्मा थेरेपी की अनुमति दे दी है। इसके साथ ही यहां प्लाज्मा थेरेपी से कोविड-19 का इलाज शुरू हो गया है। यह बात एसआरएमएस के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग की एचओडी डा. मिलन जायसवाल ने कही। उन्होंने कहा कि कोविड-19 का अभी तक कोई स्टॉटिक इलाज उपलब्ध नहीं है। ऐसे में वायरस के प्रसार को रोकने के लिए सोशल डिस्टर्नेशन, सैनिटाइजेशन और इम्यूनिटी का ही सहारा है। लेकिन संक्रमण के बाद गंभीर मरीजों के लिए ज्यादा कुछ करना संभव नहीं है। ऐसे में प्लाज्मा थेरेपी ने उम्मीद बांधी है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने भी प्लाज्मा थेरेपी से कोविड-19 संक्रमित मरीजों के उपचार पर द्रायल किया। जिसे स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने मंजूरी दी। प्रदेश सरकार ने एसआरएमएस मेडिकल कालेज को प्लाज्मा थेरेपी से इलाज की अनुमति प्रदान की है। इसके साथ ही यहां कोविड संक्रमित गंभीर मरीजों का इलाज भी शुरू हो गया है। प्लाज्मा थेरेपी के संबंध में डा. मिलन से पूछे गए प्रमुख सवाल और उनके जवाब...

**सवाल- प्लाज्मा थेरेपी है क्या ?**

**जवाब-** थेरेपी से पहले प्लाज्मा को जानना आवश्यक है। पानी और प्रोटीन से बना ब्लड का तरल हिस्सा प्लाज्मा कहलाता है। इसके जरिये लाल रक्त कोशिकाएं, सफेद रक्त कोशिकाएं और प्लेटलेट्स शरीर की हर सेल्स तक पहुंचती हैं। इसमें इम्यूनिटी के महत्वपूर्ण घटक के रूप में एंटीबाड़ी भी होते हैं। प्लाज्मा थेरेपी ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें प्लाज्मा को ब्लड सेल्स से अलग कर जरूरतमंद गंभीर मरीज को चढ़ाया जाता है। इससे मरीज में एंटीबाड़ीज पहुंचते हैं जो संक्रमण से लड़ते हैं।

**सवाल- प्लाज्मा थेरेपी कैसे काम करती है ?**

**जवाब-** वायरस संक्रमण की स्थिति में शरीर में कुछ दिन उपरांत एंटीबाड़ीज बनती हैं। जो उस संक्रमण को रोकती हैं और भविष्य में भी इस वायरस के संक्रमण के प्रति सचेत रहती है। एंटीबाड़ीज ब्लड के प्लाज्मा का हिस्सा होते हैं। ऐसे में संक्रमण से स्वस्थ होने वाले मरीज का प्लाज्मा अगर उसी वायरस से पीड़ित दूसरे मरीज में चढ़ाया जाता है, तो उसके भी शीघ्र स्वस्थ होने की संभावना बढ़ जाती है।

**सवाल- कोविड 19 से संक्रमित मरीजों के लिए प्लाज्मा थेरेपी कितना कारगर है ?**

**जवाब-** अभी तक मेडिकल साइंस में कोविड 19 का कोई उपचार उपलब्ध नहीं



डॉ. मिलन जायसवाल

- शासन ने दी प्लाज्मा थेरेपी की अनुमति, गंभीर मरीजों के इलाज में काम शुरू
- कोविड संक्रमित गंभीर मरीजों के शीघ्र स्वस्थ होने की उम्मीद में बड़ा कदम
- स्वस्थ होने के बाद कोई भी कोविड संक्रमित व्यक्ति कर सकता है प्लाज्मा डोनेट

है। इसके प्रयास चल रहे हैं। तब तक सपोर्टिंग थेरेपी के रूप में कोविड संक्रमित मरीजों का उपचार प्लाज्मा थेरेपी से किया जा रहा है। कई जगह इसके रिजल्ट बेहद फायदेमंद आए हैं। इसी को देखते हुए क्लीनिकल मैनेजमेंट के रूप में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने कोविड 19 के मरीजों के लिए इसे रिकमंड किया है। कई प्रदेशों में इसका इस्तेमाल हो रहा है। इससे उपचार के बाद काफी मरीज स्वस्थ हो रहे हैं। इसके लिए ऐसे लोगों के प्लाज्मा की जरूरत होती है जो इसके संक्रमण से स्वस्थ हो चुके हों और स्वेच्छा से प्लाज्मा दान कर दूसरों की मदद को तैयार हों।

**सवाल- कौन कर सकता है प्लाज्मा डोनेट ?**

**जवाब-** कोविड 19 के उपचार के लिए इस संक्रमण से स्वस्थ होने वाले 18 से 65 वर्ष आयु का कोई भी व्यक्ति प्लाज्मा डोनेट कर सकता है। इनका वजन 55 किग्रा से अधिक होना चाहिए। स्वस्थ हुए लोगों में कोविड 19 वायरस से मुकाबला करने वाले एंटीबाड़ीज मौजूद होते हैं। 90 दिन बाद एंटीबाड़ीज कम होने लगते हैं। ऐसे में 28 दिन से 90 दिन के बीच प्लाज्मा डोनेट करना चाहिए। प्लाज्मा डोनेट करने में भी ब्लड डोनेट करने वाले पैरामीटर लागू होते हैं। जिस तरह ब्लड डोनेट किया जाता है वैसे ही प्लाज्मा डोनेट होता है। हां इसमें ब्लड से सिर्फ प्लाज्मा ही लिया जाता है। ब्लड के दूसरे कंपोनेंट शरीर में ही रहते हैं।

**सवाल- प्लाज्मा डोनेट करने के बाद कोई दिक्कत तो नहीं होती ?**

**जवाब-** प्लाज्मा डोनेट भी ब्लड डोनेट करने के समान ही है। प्लाज्मा डोनेट करने वाले किसी व्यक्ति को कोई दिक्कत या कमजोरी नहीं होती। रक्तदाताओं की तरह ही इहें भी प्लाज्मा दान के बाद तरल पदार्थ ज्यादा सेवन और कैल्शियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम से भरपूर आहार लेने की सलाह दी जाती है। प्लाज्मा डोनेट करने के इच्छुक व्यक्तियों को डोनेट करने से पहले आयली और फ्राइड भोजन नहीं करना चाहिए। एसआरएमएस में प्लाज्मा थेरेपी से कोविड 19 संक्रमितों के इलाज की अनुमति मिल गई है। हमने इसकी तैयारियां शुरू कर दी हैं। जल्द ही इससे इलाज शुरू होगा। हां इसमें कोविड संक्रमण से निजात पाने वालों से सहयोग की जरूरत है। अनुरोध है ऐसे लोग प्लाज्मा डोनेट कर दूसरे संक्रमितों को स्वस्थ करने में योगदान करें। जिससे दूसरे कोविड 19 मरीज जल्दी स्वस्थ हो सकें।

# मेडिकल इंटर्न नकुल ने किया प्लाज्मा डोनेट



**बरेली:** कोविड- 19 को हराकर स्वस्थ हो चुके एसआरएमएस के मेडिकल इंटर्न नकुल गुप्ता ने प्लाज्मा डोनेट किया। उनके प्लाज्मा से रामपुर निवासी कोविड संक्रमित मरीज का इलाज किया गया। प्लाज्मा डोनेट करने के बाद उन्होंने कहा कि इससे वह काफी खुश हैं। इसी बहाने समाज की सेवा करने का मौका मिला है। नकुल ने संक्रमण से निजात पा चुके सभी लोगों से प्लाज्मा डोनेट करने की अपील भी की। कहा कि इससे कोविड संक्रमित मरीजों को जल्द स्वस्थ करने में आसानी होगी।

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में इंटर्न नकुल गुप्ता पिछले माह जुलाई के तीसरे सप्ताह मरीजों के उपचार के दौरान कोरोना संक्रमित हो गए थे। एसआरएमएस के कोविड वार्ड में ही उनका उपचार हुआ। इसके बाद वह प्रेमनगर रिस्थित घर में भी क्वारंटीन रहे। प्लाज्मा थेरेपी से संक्रमित मरीजों के स्वस्थ होने की रिपोर्ट के बाद उन्होंने एसआरएमएस के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग की एचओडी डा. मिलन जायसवाल से बात की और प्लाज्मा डोनेट करने का फैसला किया। शुक्रवार दोपहर एसआरएमएस ब्लड बैंक में उन्होंने प्लाज्मा डोनेट किया। उनके प्लाज्मा से रामपुर निवासी कोविड संक्रमित मरीज का इलाज किया जाएगा। नकुल के इस काम की हौसलाअफजाही एसआरएमएस आईएमएस के डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति और प्रिंसिपल डा. एसबी गुप्ता ने भी की। उन्होंने नकुल को सर्टिफिकेट के साथ ही

गिफ्ट भी दिया। बहादुरी व समाजसेवा के जब्ते को सराहा। आदित्य मूर्ति ने कहा कि पिछले महीने प्रदेश सरकार ने एसआरएमएस मेडिकल कालेज को प्लाज्मा थेरेपी से इलाज की अनुमति दी थी। इसके बाद यहां से स्वस्थ हो कर जा चुके काफी लोगों ने रुचि दिखाई और जरूरत पर प्लाज्मा डोनेट करने की स्वीकृति दी है। नकुल ने पहले प्लाज्मा डोनर के रूप में अपना नाम लिखाया है। प्लाज्मा डोनेट करने के लिए ऐसे जागरूक लोगों के आने से कोविड 19 से लड़ रहे मरीजों का जीवन बचाने में मदद मिलेगी और संक्रमण रोकना आसान होगा। ऐसे में जनहित में ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्लाज्मा डोनेट करने के लिए आगे आना चाहिए। इस मौके पर डा. जेके गोयल, डा. मिलन जायसवाल और ब्लड बैंक के सभी लोग मौजूद रहे।

## हमने कर दिया प्लाज्मा डोनेट, आप कब करेंगे

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में प्लाज्मा डोनेट करने वालों में उद्यमी दिनेश गोयल भी शामिल हैं। उन्होंने प्लाज्मा डोनेट कर अपनी जिम्मेदारी निभाने की बात कही और संक्रमण से स्वस्थ हो चुके लोगों से भी समाज सेवा के इस काम के लिए आगे आने की अपील की। मेडिकल स्टोर संचालक कर्मचारी नगर निवासी सोहन लाल ने भी प्लाज्मा डोनेट किया। हाथरस निवासी जितेंद्र गुप्ता ने प्लाज्मा डोनेट किया। यह प्लाज्मा उन्होंने कोरोना संक्रमित अपनी चचेरी बहन के लिए किया है। उड़ानी निवासी उनकी बहन एसआरएमएस के कोविड आईसीयू में उपचाराधीन हैं। उन्हें प्लाज्मा ट्रांसफ्यूजन भी कर दिया गया। ट्रांसफ्यूजन का काम खुद डा. ललित सिंह ने किया, जबकि प्लाज्मा डोनेशन का काम डा. मिलन जायसवाल की निगरानी में किया गया। उन्होंने प्लाज्मा डोनेट करने पर जितेंद्र को बधाई दी और सर्टिफिकेट व गिफ्ट भी प्रदान किया।

## अपील

### संक्रमण से निजात के लिए प्लाज्मा डोनेशन जरूरी

एसआरएमएस के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग की एचओडी डा. मिलन जायसवाल ने कोविड से स्वस्थ हो चुके सभी लोगों से प्लाज्मा डोनेट करने की अपील की। उन्होंने कहा कि प्लाज्मा दान से कोरोना से लड़ रहे मरीजों का जीवन बचाने में मदद मिलेगी। ऐसे में स्वेच्छा और जनहित में प्लाज्मा दान करने के लिए लोग आगे आएं। इसके संबंध में जानकारी एसआरएमएस मेडिकल कालेज के फोन नंबर पर ली जा सकती है।

फोन नंबर- 9458702203, 9458701408, 9458701939

0581-2582000- 1095, 2443 (एक्सटेंशन)

# आईएमएस और सीईटी में भी मनाया गया स्वतंत्रता दिवस



**बरेली:** एसआरएमएस आईएमएस और सीईटी में भी स्वतंत्रता दिवस सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखते हुए मनाया गया। एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति जी ने दोनों संस्थानों में तिरंगा फहराया और स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। उन्होंने इससे पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और स्वतंत्रता सेनानी, ट्रस्ट के प्रेरणा मोता

राम मूर्ति जी की तस्वीरों पर माल्यार्पण किया। आजादी में दोनों के योगदान की चर्चा की। उन्होंने कहा कि लंबे संघर्ष और अनगिनत जानों की कीमत पर देश आजाद हुआ है। ऐसे में हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि हम इसकी हिफाजत करें और तरकी की राह पर आगे ले जाएं। उन्होंने इसके साथ ही आज के समय में कोरोना जैसी महामारी से आजादी के लिए सभी को सामूहिक प्रयास करने और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने का भी अनुरोध किया। इस मौके पर एसआरएमएस ट्रस्ट के सेक्रेटरी आदित्य मूर्ति, एसआरएमएस

सेक्रेटरी आदित्य मूर्ति, एसआरएमएस ट्रस्ट के सेक्रेटरी आदित्य मूर्ति, एसआरएमएस

आईएमएस के प्रिंसिपल डा.एसबी सिंह, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.एके गुप्ता, डीन सीईटी प्रोफेसर डा. प्रभाकर गुप्ता, डीन प्लेसमेंट अनुज कुमार और सभी विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।

## एसआरएमएस की मॉलिक्यूलर लैब को एनएबीएल मान्यता

**बरेली:** एसआरएमएस आईएमएस की मॉलिक्यूलर लैब को एनएबीएल ने मान्यता दे दी। मेडिकल कालेज के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा संचालित इस लैब को क्वालिटी और स्टैंडर्ड में पास होने पर एनएबीएल सर्टिफिकेट दिया गया है। इससे यहां की जांच रिपोर्ट अब पूरे देश में स्वीकार्य की जाएंगी। यह जानकारी माइक्रोबायोलॉजी विभाग के एचओडी व मॉलिक्यूलर लैब के डायरेक्टर डा.राहुल कुमार गोयल ने दी। मॉलिक्यूलर लैब को एनएबीएल मान्यता पर एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति जी ने भी बधाई दी और कहा कि यह सर्टिफेक्ट मरीजों का हम पर विश्वास और बढ़ाएगा। मेडिकल कालेज के डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति ने इसके लिए टीम के प्रयासों की सराहना की।

डा. गोयल ने कहा कि एसआरएमएस मेडिकल कालेज नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फार हाईस्पिटल एंड हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स (एनएबीएच) द्वारा पहले ही मान्यता प्राप्त है। मॉलिक्यूलर लैब को भी क्वालिटी और स्टैंडर्ड में परखने के बाद नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फार टेस्टिंग एंड कैलिब्रेशन लैबोरेटरीज (एनएबीएल) द्वारा मान्यता दी गई है। एनएबीएल द्वारा जारी किया गया मान्यता पत्र और सर्टिफिकेट 10 अगस्त को मेडिकल कालेज को प्राप्त हुआ। इसमें लैब द्वारा कोविड-19 की जांच को भी मान्यता दी गई है। अब यहां की जांच रिपोर्ट एनएबीएल के लोगों के साथ जारी की जा रही है। जो देश के सभी अस्पतालों द्वारा स्वीकार हैं। उन्होंने कहा कि एनएबीएल ने हमें एक माह में ही मान्यता दी है।

- क्वालिटी और स्टैंडर्ड में पास होने पर माइक्रोबायोलॉजी को दिया सर्टिफिकेट
- मरीजों के विश्वास को और बढ़ाएगा सर्टिफिकेट: देव मूर्ति



इसकी वजह हमारे क्वालिटी स्टैंडर्ड का पहले से ही काफी हाईलेवल का होना है। हमने मॉलिक्यूलर लैब की मान्यता के लिए 19 जुलाई से प्रारंभ शुरू की थी। कई बार मानकों पर परख कर एनएबीएल ने हमारे प्रस्ताव को स्वीकार किया और लैब को सर्टिफिकेट दिया है। डा.गोयल ने इसके लिए एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति जी और डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति का आभार जताया और अपनी टीम में शामिल डा.वंदना सरदाना, डा.नीलम गुप्ता, डा.फैजिया खान, डा. मोहन सिंह और क्वालिटी विभाग के डा.तारिक मुहम्मद व निशी भारद्वाज को भी धन्यवाद दिया।

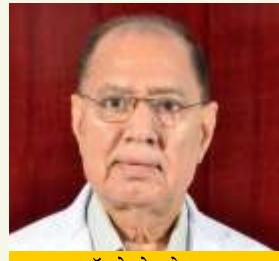
# कोविड के डर पर भारी पड़ा सेवा का जज्बा



- सुरक्षित प्रसव से संक्रमित 16 परिवारों में गूंजी किलकारियां
- एसआरएमएस में कोरोना पॉजिटिव महिलाओं की डिलिवरी में पहल
- सुरक्षा मानकों के साथ बचाई महिलाओं के साथ नवजातों की जान
- मई से जुलाई तक 16 महिलाओं की डिलिवरी हुई एसआरएमएस में

**बरेली:** एसआरएमएस मेडिकल कालेज के चिकित्सकों ने कोविड-19 के डर के बाद भी सेवाभाव को बरीयता दी। वायरस संक्रमण के इस दौर में ऐसी महिलाओं की डिलिवरी कराई जो कोरोना पॉजिटिव या संदिग्ध थीं। इमरजेंसी में आई इन सभी महिलाओं को तुरंत उपचार की जरूरत थी। ऐसे में आपरेशन कर किसी की डिलिवरी कराई गई तो किसी की नार्मल डिलिवरी हुई। यह जानकारी गायनेकोलाजी विभाग के एचओडी डा.जेके गोयल ने दी। उन्होंने बताया कि 23 मई से आज (28 जुलाई) तक एसआरएमएस में कोविड पॉजिटिव और संदिग्ध 16 महिलाओं की डिलिवरी सफलतापूर्वक कराई गई है। डा.गोयल ने कहा कि डिलिवरी के लिए आने वाली पहली महिला बदायूं की कोविड पॉजिटिव आसना जीशान थीं। वह 23 मई को एसआरएमएस पहुंची। 36 हप्स की प्रेगनेंट आसना को असहनीय दर्द था। डा.अंकिता गुप्ता और डा.प्रियंका जैन ने इनका आपरेशन किया। बेटा हुआ। बांस मंडी की कीर्ति, कोविड संदिग्ध थीं। वह छह जून को एसआरएमएस पहुंची। कीर्ति को डा.रुचिका ने अटेंड किया। आपरेशन से उन्होंने बेटी को जन्म दिया। शाहजहांपुर के अहमदजलाल नगर की नवी फातिमा कोविड सर्स्पेक्टेड थीं। वह भी छह जून को एसआरएमएस पहुंची। डा.रुचिका ने इन्हें भी अटेंड किया। नार्मल डिलिवरी में फातिमा ने बेटे को जन्म दिया। रामपुर की मेहनाज 14 जून को एसआरएमएस में भर्ती हुई। इन्हें डा.मृदु सिन्हा और डा.अंशिका ने अटेंड किया। दो दिन उपचार के बाद उनका आपरेशन करना पड़ा। बिटिया हुई। डा.गोयल के कहा कि पांचवीं डिलिवरी बदायूं निवासी

दीपा की हुई। वह 26 जून को एसआरएमएस पहुंची। इन्हें डा.शांति और डा.प्रियंका चौहान ने अटेंड किया। इनका भी आपरेशन करना पड़ा। बच्चे का जन्म हुआ। बरेली के बिहारीपुर निवासी रूबी दो जुलाई को एसआरएमएस में भर्ती हुई। इन्हें डा.शशिबाला और डा.साक्षी ने अटेंड किया। आपरेशन के बाद रूबी ने बिटिया को जन्म दिया। नवाबगंज की रूबी गुप्ता छह जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। रूबी भी कोविड पॉजिटिव थीं। इन्हें डा.मृदु सिन्हा और डा.साक्षी ने अटेंड किया। नार्मल डिलिवरी के प्रयास के बाद रूबी का आपरेशन किया गया और उन्होंने बेटे को जन्म दिया। पीलीभीत के आवास विकास निवासी पर्णी शुक्ला 16 जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। डा.साक्षी ने अटेंड किया। आपरेशन से इन्होंने बेटे को जन्म दिया। साहूकारा निवासी सिमरा कोविड पॉजिटिव थीं। यह 21 जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। इन्हें डा.शशिबाला और डा.अंकिता ने अटेंड किया। इन्होंने भी आपरेशन के बाद बेटे को जन्म दिया। भुता की प्रभा कोविड पॉजिटिव थीं। असहनीय दर्द के चलते 22 जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। इन्हें डा.शशिबाला और डा.अंकिता यादव ने अटेंड किया। आपरेशन से बेटे का जन्म हुआ। भुता की ही ममता 23 जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। इन्हें भी डा.शशिबाला और डा.अंकिता यादव ने अटेंड किया। जांच में कोविड पॉजिटिव रिपोर्ट आई। नार्मल डिलिवरी से बिटिया को जन्म हुआ। करगैना निवासी रचना कोविड



डा. जे.के. गोयल

पॉजिटिव थी। 23 जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। इन्हें डा.शशिबाला और डा.सुकीर्ति ने अटेंड किया। आपरेशन से बिटिया का जन्म हुआ। इसी दिन गुलाबनगर की शुभांगी एसआरएमएस पहुंची। कोविड पॉजिटिव शुभांगी को डा.शशिबाला और डा.सुकीर्ति ने ही अटेंड किया। आपरेशन से बेटे का जन्म हुआ। सुभाषनगर की अनीता 24 जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। इन्हें डा.शशिबाला और डा.अंकिता ने अटेंड किया। आपरेशन से बेटे का जन्म हुआ। फरीदपुर की हसीन भी असहनीय दर्द की बजह से 25 जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। इन्हें भी डा.शशिबाला और डा.अंकिता ने अटेंड किया। जांच में कोविड पॉजिटिव होने के कारण सावधानी से आपरेशन हुआ। जिसमें इन्होंने बिटिया को जन्म दिया। अमृता 27 जुलाई को एसआरएमएस पहुंची। आपरेशन से बच्चे को जन्म दिया। डा.गोयल ने कहा कि सभी कोविड पॉजिटिव महिलाओं को शासन की गाइडलाइन के अनुसार क्वारंटीन के बाद डिस्चार्ज किया गया। डा.गोयल ने इन सभी कोविड पॉजिटिव और संदिग्ध महिलाओं को अटेंड करने वाले डाक्टरों की तारीफ की। उन्होंने कहा कि इन सभी ने कोविड से बिना डरे, सावधानी बरत कर अपने काम को तवज्जो दी। सभी बधाई के पात्र हैं। एसआरएमएस ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति और डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति ने भी सभी चिकित्सकों के काम को सराहा और बधाई दी।

# आठ माह के बच्चे को दिया जीवन

**बरेली:** शाहाबाद (हरदौई) के गांव ऐगवां निवासी परवेज खां के बेटे गुलाम अता उल्ला (आठ माह) के पूरे शरीर में सूजन थी। यूरीन नहीं आ रहा था, किडनी काम नहीं कर रही थीं। तबियत काफी नाजुक थी। दो वर्ष पहले उनके बड़े बेटे को भी लगभग इसी उम्र में यही दिक्कत हुई थी। जिसे शाहजहांपुर और लखनऊ के कई अस्पतालों में दिखाया गया। किसी रिस्टेदार ने श्री राम मृति स्मारक मेडिकल कालेज ले जाने की सलाह दी। यहां पीआईसीयू इंजार्ज डा. अतुल गुप्ता से बात हुई। उन्होंने लाने के लिए कहा लेकिन, लाने से पहले ही बच्चा जिंदगी की जंग हार गया। दूसरे बच्चे में भी दिक्कत होने पर परेशान परवेज उसे लेकर सीधे एसआरएमएस मेडिकल कालेज पहुंचे। यहां जांच में उसे हीमोलिटिक यूरोमिक सिंड्रोम से संक्रमित पाया गया। यह दुर्लभ बीमारी एक लाख बच्चों में से किसी एक में ही होती है। इसका जेनेटिक म्यूटेशन, आनुवंशिक कमियों से बच्चे होते हैं एच्यूएस से ग्रसित होते हैं।

● शाहाबाद निवासी परवेज के पहले बेटे की इसी बीमारी से ही हुई थी मौत



परवेज के बेटे अताउल्ला के साथ डॉ. अतुल कुमार अपनी टीम के साथ

- 27 दिन इलाज के बाद परवेज के बेटे गुलाम अता उल्ला की छुट्टी
- एक लाख में एक ही बच्चा होता है हीमोलिटिक यूरोमिक सिंड्रोम से प्रभावित
- जेनेटिक म्यूटेशन, आनुवंशिक कमियों से बच्चे होते हैं एच्यूएस से ग्रसित
- शाहाबाद निवासी परवेज के पहले बेटे की इसी बीमारी से ही हुई थी मौत

चेकअप हुआ। तब तक बच्चा पूरी तरह से स्वस्थ होकर अपना सामान्य बचपन जीने लगा। डा. अतुल इसके लिए ऊपर वाले का आभार जताते हैं और कहते हैं कि करने वाला तो सब वही है। हम अपनी मैहनत जरूर करते हैं। इसी का रिजल्ट मिला। वे इस केस में डा. विजय श्री, डा. अदिति गुप्ता, डा. मनादि सक्सेना के सहयोग को भी नहीं भूलते। इनको भी धन्यवाद देते हैं। उधर परवेज के शिक्षक भाई खान जावेद कहते हैं कि अब भर्तीजा गुलाम अता उल्ला पूरी तरह से स्वस्थ है और उसकी शरारतें भी बढ़ गई हैं। वे इसके लिए एसआरएमएस को भी धन्यवाद देते हैं और डा. अतुल और उनके स्टाफ को भी। वे कहते हैं कि अगर पहले बेटे को भी एसआरएमएस ले जाते तो शायद उसकी भी जान बच जाती। गुलाम अता उल्ला की जान बचा कर एसआरएमएस ने परिवार पर बड़ा एहसान किया है।

## क्या है पेरीटोनियल डायलिसिस

इस प्रकार की डायलिसिस में अनेक छेदों वाली नली सीएपीडी कैथेटर को पेट में नाभि के नीचे छोटा चीरा

पेरीटोनियल डायलिसिस व प्लाज्मा इंफ्यूजन से बचाई जान

“  
परवेज खां के बेटे गुलाम अता उल्ला के पूरे शरीर में सूजन थी। खून की कमी से शरीर सफेद पड़ गया था। किडनी भी काम नहीं कर रही थी। जिससे पेशाब आना भी बंद हो गई थी। वजन भी 8.7 किग्रा वजन था। इस गंभीर अवस्था में वह एसआरएमएस लाया गया। जांच में हीमोलिटिक यूरोमिक सिंड्रोम से पीड़ित होने की जानकारी मिली। यह आनुवंशिक बीमारी है। दो वर्ष पहले परवेज के पहले बेटे को भी इसी उम्र में यह बीमारी हुई थी। परवेज ने उसका इलाज लखनऊ में कराया लेकिन उसकी मौत हो गई। वैसे ही लक्षण देख कर वह इस बच्चे को लेकर यहां आए। पेरीटोनियल डायलिसिस करने का फैसला किया। इससे फायदा हुआ और दस दिन में बच्चे को यूरीन आने लगा। महीने भर के अंदर बच्चा स्वस्थ होकर घर चला गया।”

-डा. अतुल कुमार गुप्ता  
इंजार्ज पीआईसीयू

लगाकर रखा जाता है। सीएपीडी कैथेटर इस प्रक्रिया को शुरू करने से 10 से 14 दिन पहले पेट के अंदर डाला जाता है। यह नली सिलिकॉन जैसे विशेष पदार्थ की बनी होती है। इस नली द्वारा दिन में तीन से चार बार दो लीटर डायलिसिस द्रव पेट में डालते हैं और निश्चित घंटों के बाद उस द्रव को बाहर निकालते हैं। डायलिसिस के लिए प्लास्टिक की नरम थैली में रखा द्रव पेट में डालने के बाद खाली थैली कमर में पट्टे के साथ बांधकर आराम से घूमा-फिरा जा सकता है।

# इलाज से पहले मरीजों की काउंसिलिंग जरूरी



डॉ. एस.के. सागर

**बरेली:** एसआरएमएस मेडिकल कालेज में 8 से 22 अगस्त को मेडिकल इथिक्स पर वर्कशाप हुई। प्रिसिंपल डा.एसबी गुप्ता ने विद्यार्थियों को मरीजों से अच्छा व्यवहार करने की सलाह दी। डा.गुप्ता ने कहा कि इससे ही मरीज की आधी परेशानी खत्म हो जाती है। अगर अभी से मरीजों को सिंपैथी के साथ इंपैथी देना आप सीख जाएंगे तो यह आदत जिंदगी भर आपके काम आएगी। मेहनत से मरीजों के उपचार का कर्तव्य निभाएं। बदले में आपको ही मरीजों से दुआएं मिलेंगी और आप कामयाब होंगे।

फिजियोलाजी विभाग द्वारा आयोजित वर्कशाप में सभी का स्वागत विभाग की अध्यक्ष डा. बिंदु गर्ग ने किया। उन्होंने नए विद्यार्थियों को वर्कशाप की जरूरत बताई। कहा कि पीजी के स्टूडेंट सीधे मरीजों के संपर्क में रहते हैं। ऐसे में मेडिकल इथिक्स की जानकारी होने से मरीजों के साथ व्यवहार संतुलित हो जाता है और जरूरत के अनुरूप फैसले लेने में आसानी होती है। यहां दी गई सीख और मरीजों से किया व्यवहार आजीवन काम आता है। पहले पखवाड़े में हुई वर्कशाप में पहले वक्ता के रूप में डा. एसके सागर ने कम्युनिकेशन स्किल, इथिकल प्रैक्टिस और डिसीजन मेंिंग पर जोर दिया। उन्होंने उपचार के दौरान मरीजों के सामने सारे रिस्क फैक्टर की जानकारी देने के साथ सारे विकल्प रखे जाने की बात कही। इस पर उनकी राय लेने। डिसीजन लेने में

- एसआरएमएस मेडिकल कालेज में मेडिकल इथिक्स पर हुई वर्कशाप
- पीजी स्टूडेंट्स को विशेषज्ञों ने दिए मरीजों से कम्युनिकेशन के टिप्प

मरीज और उसके परिजनों की मदद करने पर भी उन्होंने सलाह दी। कहा कि इससे मरीज और परिजन संतुष्ट होते हैं और आप पर उनका विश्वास बढ़ता है। डा.पीएल प्रसाद ने कहा कि जिंदगी बार बार आती है लेकिन मौत एक ही बार आकर सब खत्म कर देती है। ऐसे में जिंदगी बचाने के सारे उपायों को आजमाना जरूरी है। मरीजों के प्रति आपकी संवेदनशीलता ही आपको अलग करेगी और ईमानदारी से की गयी कोशिश आपको पहचान दिलाएगी। डा.शशिवाला ने भी मरीजों को बीमारी और उपचार संबंधी सारी जानकारी देने को जरूरी बताया। उन्होंने कहा कि इलाज के लिए सबसे अच्छा रास्ता चुना जरूरी है। लेकिन इथिक्स से अच्छे और बुरे रास्ते की पहचान आसानी से संभव है। मरीज और इलाज के फायदे सच्चाई बताना जरूरी है। लेकिन यह दोधारी तलवार की तरह है और परिस्थितियों और कई बातों पर निर्भर है। हमें ऐसे बताने की कला सीखनी चाहिए। नहीं तो डाक्टरों को झूठ बताने में देर नहीं लगती। डा.प्रतीक गहलोत ने मरीज की निजता बनाए रखने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मरीज का विश्वास बनाए रखने के लिए यह जरूरी है। मरीज की मौत के बाद भी इसका पालन

करना जरूरी होता है। हालांकि कई बार इससे नुकसान की भी आशंका होती है। ऐसे में जनहित देखना जरूरी है। ऐसे में परिस्थिति देख कर खुद फैसला लेना आवश्यक है कि निजता को कब छिपाना है या कब और किसे बताना। वर्कशाप में विद्यार्थियों को डा. अयुष गर्ग ने मरीज को भावनात्मक सपोर्ट देने की जरूरत पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने मरीज से बात करने के लिए उचित माहौल बनाने, जानकारी देने, उसका रिएक्शन देखने की सलाह दी। हां ओपीडी से निकलने से पहले मरीज से एक बार और उसकी आशंकाओं के बारे में पूछना चाहिए और उनका पुनः समाधान करने से मरीज का इलाज आसान हो जाता है। डा.विष्णु निजता के अधिकार के साथ ही लैबोरेटरी के नियम और इसके उल्लंघन पर पेनालटी व सजा का जिक्र कर विद्यार्थियों को कानूनी प्रक्रिया से अवगत कराया। डा.मनीष मल्होत्रा ने मरीजों के इलाज के संबंध में संविधान के प्रावधानों की जानकारी दी। 22 अगस्त को मेडिकल इथिक्स पर भी वर्कशॉप हुई जिसमें डा. सुजाता, डा. दीप पंत, डा. पुनीत कुमार, डा. एम.पी. रावल, डा. अंकिता बाजपेयी, डा. संध्या चौहान ने भी जानकारी दी।



# एसआरएमएस में रेस्पिरेटरी ओपीडी नये ब्लॉक में शिफ्ट

ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति ने दिया संस्थान में उच्चश्रेणी के इलाज का भरोसा शुरूआती अवस्था में लंगस कैंसर की जांच के लिए ईबस सुविधा भी उपलब्ध

**बरेली:** एसआरएमएस आइएमएस में दो अगस्त को रेस्पिरेटरी ओपीडी नये और अत्याधुनिक ब्लॉक में शिफ्ट हो गयी। इस मौके पर हवन पूजन हुआ। जिसमें एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति, डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति, कालेज के प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता, रेस्पिरेटरी मेडिसिन डिपार्टमेंट के एचओडी डा. ललित सिंह और आब्स्ट्रेट्रिक्स एंड गायनेकोलाजी डिपार्टमेंट के हेड डा. जेके गोयल शामिल हुए।

इस मौके पर देवमूर्ति जी ने मरीजों को एसआरएमएस में उच्चश्रेणी का इलाज उपलब्ध कराने का भरोसा दिया। उन्होंने कहा कि हमारे यहां सभी जरूरी

अत्याधुनिक सुविधाएं मरीजों के लिए उपलब्ध हैं। शुरूआती अवस्था में लंगस कैंसर का पता लगाने के लिए ईबस सुविधा भी हमारे संस्थान में है। एसआरएमएस पर मरीज विश्वास करते हैं और हम उच्च श्रेणी का इलाज न्यूनतम खर्च पर उपलब्ध करा कर उनके भरोसे को कायम रखने की कोशिश कर रहे हैं। इसी वजह से रेस्पिरेटरी ओपीडी को नये और अत्याधुनिक ब्लॉक में शिफ्ट किया गया है। इस मौके पर मेडिकल कालेज के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा. आरपी सिंह, सभी विभागों के एचओडी व अन्य प्रमुख लोग मौजूद रहे।

## एसआरएमएस में कोविड मरीजों की हो रही है काउंसिलिंग

**बरेली:** घर से दूर रह कर उपचार कराने वाले कोविड संक्रमित मरीजों को सबसे ज्यादा कमी भावनात्मक सहारे की होती है। कमी से उनमें जीवन के प्रति निराशा के भाव उत्पन्न हो जाते हैं, जो स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। ऐसी स्थिति से मरीजों को निकालने के लिए एसआरएमएस मेडिकल कालेज ने अपने यहां काउंसिलिंग शुरू की है। यह जानकारी मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता ने दी। डा.गुप्ता ने कहा कि एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति जी मरीजों को गुणवत्तापूर्ण सुविधाएं देने के लिए संकल्पबद्ध हैं। उन्होंने के निर्देश पर मेडिकल कालेज में भर्ती मरीजों को भावनात्मक सहारे के लिए काउंसिलिंग शुरू की गई है। इसके लिए आइसोलेशन वार्ड में दो ट्यूटर नियुक्त किये गये हैं। जो बारी बारी से अपनी ड्यूटी के दौरान वार्ड में भर्ती प्रत्येक मरीज की काउंसिलिंग कर उन्हें निराशा से निकाल रहे हैं। यह लोग कोविड से संबंधित उनके सवालों का जवाब देकर बीमारी से डर दूर कर उनका मनोबल भी बढ़ा रहे हैं। इनके माध्यम से अस्पताल प्रशासन

भर्ती मरीजों के स्वास्थ्य की जानकारी फोन  
पर भी ले रहे हैं परिजन  
शाम 3-4 चार बजे के बीच  
संबंधित चिकित्सकों से भी हो रही मुलाकात



डॉ. एस.बी. गुप्ता

कोविड वार्ड में मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं की निगरानी के साथ वार्ड और टायलेट की सफाई भी सुनिश्चित करा रहा है। यह ट्यूटर मरीजों से चादर बदलने, डाक्टरों के आने, समय पर दवा मिलने, ठीक से देखभाल होने की जानकारी लेने के साथ ही दिये जा रहे ब्रेकफास्ट, लंच और डिनर का

फीडबैक लेकर इसकी गुणवत्ता भी सुनिश्चित कर रहे हैं। इनसे मिले फीडबैक के आधार पर मरीजों के सुझावों पर भी अमल किया जा रहा है। डा.गुप्ता ने कहा कि एसआरएमएस में मरीजों के स्वास्थ्य संबंधी जानकारी उनके परिजनों को डाक्टर, वार्ड मैनेजर, मैट्रन आफिस द्वारा फोन पर दी जा रही है। इसके साथ ही परिजनों को व्यक्तिगत रूप से डाक्टर से मिलने की सुविधा भी आरंभ की गई है। परिजन और रिश्तेदार शाम तीन से चार बजे के बीच मेडिकल कालेज के स्क्रीनिंग एरिया में संबंधित डाक्टर से अपने मरीज के संबंध में जानकारी ले रहे हैं। डा.गुप्ता ने कहा कि हमारा प्रयास मरीजों को बेहतर से बेहतर स्वास्थ्य सेवायें देने का है। मरीजों का फीडबैक इसे और इंप्रूव करने में हमारी मदद करेगा।

# मधुमेह, हाईबीपी और अस्थमा पीड़ित भी कर सकते हैं नेत्र दान, क्योंकि... मरने के बाद भी जिंदा रहेंगी आपकी आंखें

**बरेली:** राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा प्रति वर्ष 25 अगस्त से 8 सितम्बर तक मनाया जाता है। इस दौरान लोगों को नेत्रदान के महत्व के बारे में जानकारी देकर उन्हें मृत्यु के बाद अपनी आंखें दान करने की शपथ लेने के लिए प्रेरित करना है। जिससे मरने के बाद भी आपकी आंखें दूसरों के जीवन में रोशनी भरने में आएंगी काम

**एसआरएमएस आईबैंक के टोल फ्री नंबर 1919 या 0581-2582000, 7900552000 पर संपर्क करें**



डॉ. नीलिमा मेहरोत्रा

**सवाल:** नेत्रदान से क्या चेहरा खराब हो जाता हैं?

**डा. नीलिमा-** यह केवल एक मिथक है। नेत्रदान से व्यक्ति का चेहरा खराब नहीं होता। कार्निया का निकाला जाना किसी भी तरह की विकृति का कारण नहीं है। इससे कोई विकृति नहीं दिखती।

**सवाल:** मैं अपनी आंखें कैसे दान कर सकता हूँ?

**डा. नीलिमा-** नेत्र दान के लिए आपको शपथ पत्र भरकर नजदीकी नेत्र बैंक को भेजना होगा। एक बार नेत्र दाता के तौर पर पंजीकृत होने के बाद आपको नेत्रदाता कार्ड उपलब्ध कराया जाएगा। यदि नेत्र दान का फार्म नहीं भरा है तो भी नेत्र दान संभव है।

**सवाल:** मैं यह कैसे जान सकता हूँ कि मुझे अपनी आंखें कहाँ दान करनी हैं?

**डा. नीलिमा-** इसके लिए आप एसआरएमएस मेडिकल कालेज के आईबैंक में संपर्क कर सकते हैं। एसआरएमएस आईबैंक 2002 में शुरू हुआ।

**सवाल:** नेत्रदान से कितने लाभान्वित हो सकते हैं?

**डा. नीलिमा-** नेत्रदान से कम से कम दो व्यक्ति लाभान्वित हो सकते हैं। दानकर्ता की दोनों आंखें दो या इससे अधिक कार्निया से नेत्रहीन व्यक्तियों को लगाई जाती हैं। एसआरएमएस में कार्निया प्रत्यारोपण का काम भी उसी दिन कर लिया जाता है।

**सवाल:** मैं अपनी आंखें कब दान कर सकता हूँ?

**डा. नीलिमा-** नेत्रदान की शपथ किसी भी उम्र में ली जा सकती है, लेकिन नेत्रदान केवल मृत्यु के बाद ही किया जा सकता है। शपथ लेने वाला व्यक्ति दूसरों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करता है।

**सवाल:** यदि मैं अपनी आंखें दान करता हूँ, तो यह बात क्या दूसरों को मालूम होगी?

**डा. नीलिमा-** नेत्रदाता और प्राप्तकर्ता दोनों की

## खास बातें...

- स्त्री-पुरुष केवल अपनी मृत्यु के पश्चात ही नेत्रदान कर सकते हैं ● नेत्रदान से केवल कार्निया से नेत्रहीन व्यक्ति ही लाभान्वित हो सकते हैं
- कोई भी व्यक्ति चाहे, वह किसी भी उम्र, लिंग, या धर्म का हो, आंखें दान कर सकता है
- कार्निया को मृत्यु के एक से आठ घंटे के भीतर निकाला जाना चाहिए ● नेत्रदाता दो या इससे अधिक कार्निया से नेत्रहीन व्यक्तियों की दृष्टि बचा सकता है ● नेत्र निकालने में केवल 10 से 15 मिनट लगते हैं तथा चेहरे पर कोई निशान नहीं रहता ● पंजीकृत नेत्रदाता बनने के लिए एसआरएमएस मेडिकल कालेज के नेत्र बैंक से आज ही संपर्क करें

पहचान को गोपनीय रखनी जाती है।

**सवाल:** क्या नेत्रदाता के परिवार को किसी भी तरह का भुगतान या शुल्क मिलेगा?

**डा. नीलिमा-** नहीं, मानव की आंखें, अंगों और ऊतकों को खरीदना व बेचना अवैध है। नेत्र प्रत्यारोपण के साथ जुड़े किसी भी तरह के खर्च का वहन नेत्र बैंक द्वारा किया जाता है।

**सवाल:** अस्पताल ले जाने की जरूरत होगी?

**डा. नीलिमा-** नहीं, आपको केवल एसआरएमएस आईबैंक से संपर्क करने की जरूरत है। यहां की टीम नेत्र दाता के निवास या अस्पताल, जहां नेत्र दाता की मृत्यु हुई है, वहां जाकर कार्निया निकाल लेगी।

**सवाल:** नेत्रदान की कुछ औपचारिकताएं भी हैं?

**डा. नीलिमा-** परिजनों की लिखित सहमति से दो गवाहों की उपस्थिति में ही नेत्र दान संभव है।

श्री राममूर्ति स्मारक

द्रस्ट द्वारा  
आयोजित कहानी  
प्रतियोगिता 2002  
में प्रथम स्थान  
प्राप्त कहानी

# अंतहीन

लेखक- नवीन कुमार शुक्ला, केडीए कालोनी, कानपुर

इस छोटे से पहाड़ी कस्बे की सबसे ऊँची जगह से पहाड़ों को देखना कितना सुख देता है। नैन्सी सोच रही थी- जब से होश सम्हाला, पहाड़ों पर आकर रहना पड़ेगा, सबको छोड़कर, ये उसने न कभी सोचा था, न चाहा था। आज भी भूले-भटके नीचे के छूट चुके मैदान उसके और पहाड़ों के बीच आ जाते हैं। नैन्सी ने सर झटक दिया, ध्यान कलाई घड़ी पर गया। समय हो गया है, चलना चाहिए। उसने पश्चिम की ओर पैर मोड़े, नीचे ही उसका स्कूल था। एक रंग की ड्रेस में बच्चे फूलों की तरह इधर-उधर दौड़ते दिख रहे हैं। स्कूल के बरामदे में पैर रखते ही सामने से मोहन लाल आते दिखे। मोहन लाल किन्हीं अज्ञात कारणों से नैन्सी से बैर रखते थे और जब-तब उसके विरुद्ध मोर्चा खोल देते थे। नैन्सी को भी शुरूआत में इनसे कुछ परेशानी मिली, पर अब वो इससे निपटने का उपाय जान गयी थी। नैन्सी को पास आते देख मोहन लाल से न रहा गया, चेहरे पर बनावटी और ईर्ष्या की मुस्कान लाते हुए बोले- मिस नैन्सी, आज तो आपने बहुत खूबसूरत कार्डिंगन पहना है।

नैन्सी टोन बदल कर बोली, कहां ? मोहन लाल जी, इससे अच्छे तो मिसेज शालिनी वर्मा रोज बदलती हैं। मोहन लाल की हंसी गायब हो गयी। बात उसकी पत्ती की थी, उसे लगा कि उसका फेंका तीर उसपे ही धंस गया है। मुस्कराने की बारी अब नैन्सी की थी। मोहन लाल हड्डबड़ाहट में बोले, हां। आप सही कहती हैं। फिर वो दूसरी ओर मुड़ गई। जब छुट्टी की घंटी लगी, दो बज रहे थे। ऊपर आसमां पे बदल लदे- खड़े थे, जैसे घंटी का ही इंतजार कर रहे थे। घंटी लगी तो पहले टपकना, फिर बरसना शुरू कर दिया। सारे टीचर्स स्टाफ रूम में बैठ गए थे। नैन्सी शीशों पर पानी की बूंदों का पड़ना और उनका नीचे उतरना देख रही थी। तभी किसी ने जम्हाई लेते हुए कहा- अरे बरसना था तो जब घर पहुंच जाते तब बरसता। किसी दूसरे ने कहा- हां बारिश और धूप को भी हमारे इशारों पर चलना चाहिए। नैन्सी सब कुछ सुनकर मुस्करा रही थी। तभी सबने देखा, मोहन लाल तेजी से कर्मरे में आए। अपना बैग और टिफिन बाक्स उठाकर बाहर जाने लगे। पूछा गया- मोहन जी, पानी नहीं देखते क्या, कहां भागे जा रहे हैं ? मोहन लाल रुके, रुमाल से पसीना पोछते हुए बोले- घर से फोन आया था, वाइफ को पेन शुरू हो गए हैं, जाना पड़ेगा। सभी चुप हो गए, नैन्सी भागती हुई उनके पास आयी- ये छाता ले जाइए। थैंक्यू मोहन ने छाता लेते हुए कहा और चल दिए। घड़ी में छह बज रहे थे, जब नैन्सी घर पहुंची। आसपास सब जगह अंधेरे के कदम पड़ रहे थे। थकी हारी नैन्सी पलांग पर पसर गयी। पहले घर, फिर स्कूल, फिर मिस्टर सिन्हा के साथ एकाउंट्स में माथा पच्ची। और आज तो कुछ लेटर भी टाइप करने पड़े। इतना काम नैन्सी ने क्यों अपना लिया ? जिससे वो अपने अतीत से पीछा छुड़ा सके या जिससे उसे जिंदगी में कुछ और देखने की फुरसत न मिले ? पर क्या इन व्यस्तताओं से ही हम खुद से स्वतंत्र हो सकते हैं। अपनी मानसिक व्यथाओं से मुक्ति पा सकते हैं ? जिस तरह से नैन्सी को अभी लग रहा था कि वो सिर्फ थकी है और उसे अपनी थकान मिटानी है।

एकाएक बिजली गुल हो गई, थकान तो अब भी लग रही थी, पर इस पूरी कॉर्टेज में, अंधेरे में, अकेले उसे कुछ डर लग रहा था। कम से कम एक साथी तो होना चाहिए। उसने लैंप जलाई, उसके पीछे की दीवार पर उसकी एक बड़ी छाया उभर आई। वो लैंप के साथ किचन पहुंची। अंधेरे में आटा गूंथते हुए वो अतीत में मिल चुके अपने अंधेरे के साथियों को देखने लगी। उसे अंधेरे से बचपन से ही डर लगता था। तब अंधेरे होते ही वो मां का पल्लू पकड़ कर चलती थी। जब उसने ये बात तुषार को बताई थी, तो उसने कहा था- अंधेरे में समझना कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम्हारे आसपास हूँ, तुम्हें डर न लगेगा। वो मुस्कराई, आंखों में विषाद था, उदासी थी, आज भी अंधेरा है, पर ये दोनों ही आज नहीं हैं। समय बीतता जाता है, साथ ही सब कुछ बदलता जाता है, हम किसका सहारा मांगे, किसकी प्रतीक्षा करें, उस रात, रात भर स्कू- रुक कर पानी बरसता रहा। नैन्सी आज देर तक सोयी, एक तो बारिश ने कुछ आलसी कर दिया, दूसरे आज संडे था। अंगाड़ी लेते उठी, कैलेंडर पर नजर डाली। 14 अगस्त दिन रविवार। अचानक वो उठी, भाग कर कैलेंडर के पास पहुंची। धीमे, बोझिल कदमों से बापस आकर पलांग पर बैठ गई। आज ही तो मां नहीं रही थीं। उसने अपनी हयेलियों को देखा, इन्हीं के बीच मां का दुबला पतला हाथ था। अपने अग्निर्दिनों में मां को सिर्फ उसी की चिंता थी और चिंता लिए हुए वो हमेशा के लिए सो गयीं। नैन्सी के कानों में मां का कोमल स्वर उभरा, नंदू, नंदू। नैन्सी की हयेली पर टप-टप आंसू गिरने लगे। मन बोझिल हो गया।

रोजमर्मी के काम निपटाने के बाद नैन्सी को लगा कि आज मंदिर जाना चाहिए, पर अकेले नहीं। वो सिन्हा के घर की ओर मुड़ गयी। फाटक खोलने के बाद अंदर पहुंच कर उसकी नजर बार्यां और गयी। उस छोटे से गार्डन में उसके हाथों का लगा मनी प्लांट धीरे- धीरे जवान हो रहा था। हैलो, यंग लेडी। मि.सिन्हा पीछे से बोल पड़े। सिन्हा साठ साल को छू रहे थे, बाल सफेद, आंखों पर मोटा चश्मा। मि.सिन्हा के पीछे था उनका अतीत, आगे था उनका अतीत। प्रायः अतीत में ही रहते थे। आओ, यहीं बैठो बरामदे में। कॉफी लाता हूँ, अभी बनाई है। नैन्सी को कप देते हुए बोले, पर आज तो संडे है, आज के दिन तो मैंने तुम्हारी डच्यूटी नहीं मांगी। नैन्सी मुस्करा दी। सिन्हा उसकी ओर कुछ देर देखते रहे, 14 अगस्त। आज पाकिस्तान का स्वतंत्रता दिवस है। फिर वो गार्डन की ओर देखते हुए बोले, आज ही हम लोगों ने पाकिस्तान का



बार्डर क्रास किया था। गार्डन में हरियाली की जगह उनका अतीत आ गया। प्रायः अतीत चेहरे पर उदासी ही लाता है। नैन्सी बोल उठी, और आज ही मेरी मां नहीं रहीं थीं। सिन्हा चाँक गए—सौरी...दोनों चुप हो गए, वहां वातावरण बोझिल हो रहा था। कुछ देर बाद नैन्सी ने अपने दुखों को एक तरफ करा और चहकती हुई बोली, सर देवकाली चलेंगे। सिन्हा नैन्सी को मुस्कराता देख भीतर से बहुत खुश हुए। वो नैन्सी की इच्छा को मना नहीं कर सकते थे। ठाई साल की अपनी इस जान- पहचान में नैन्सी ने कुछ एकाध इच्छाएं ही कीं, जिन्हें सिन्हा को मानना पड़ा।

बारिश में सब धूल गया था। सब जगह नवी सी नजर आ रही थी। हवा तेज और ठंडी थी। वो संभल- संभल कर चले आ रहे थे। देवकाली वहां का एक मात्र प्रसिद्ध मंदिर था। कुछ ऊंचाई पर। आज कई दिन बाद घर से इतनी दूर आकर नैन्सी को बेहद अच्छा लग रहा था। उस जगह पर रौनक थी, चहल पहल थी। इस मंदिर की सीढ़ियों के ऊपर मोटा धंटा लटका था, जिसकी ऊंचाई सीढ़ी से कुछ ज्यादा थी। छोटे- छोटे बच्चे उछल- उछल कर उसे बजाने की नाकाम कोशिश कर रहे थे। ये सब देख कर नैन्सी को कुछ याद आ गया। इसी तरह तुषार ने उसे ऊपर उठा कर घूंटे को बजाने के लिए कहा था और फिर बैलेंस बिंगड़ जाने पर दोनों सीढ़ियों से गिरते- पड़ते नीचे आ गिरे थे। दाएं पैर की एड़ी में चोट लगी थी। आज भी उस चोट का निशान एड़ी पर था। नैन्सी उसे देख रही थी। उसे लगा कि अतीत भविष्य में भी सामने आने के लिए कुछ रास्ते, कुछ निशान बनाता चलता है। उसने सिन्हा की ओर देखा, वो अपनी बार्यों और थोड़ा दूर एक पत्थर की बनी सीट को देख रहे थे। जब उन्होंने महसूस किया कि नैन्सी का ध्यान उसकी ओर है वो बोले- ये सीट देख रही हो, तब ये इस तरह की न थी, सिर्फ एक चट्टान थी, पत्थर की। मैं और माला जब भी यहां आते, इसी पर बैठते थे। नैन्सी मुस्करा दी। अतीत भविष्य में भी सामने...।

हैलो मि.देवेश तुम यहां कैसे ? मैं तो यहां हर संडे को आता हूं अंकल। पर आप लोग शायद अब जा रहे हैं। देवेश बड़ी सावधानी से नैन्सी की बड़ी-बड़ी आंखों में देखता जाता था। सिन्हा, नैन्सी की ओर देख कर बोले, हां, मैं तो जाना चाहता हूं। नैन्सी, तुम चाहो तो रुक जाओ। नैन्सी ने देवेश, फिर सिन्हा को देखा। नहीं अंकल मैं भी चलूंगी। देर हो रही है। अच्छा देवेश बाय। दोनों जाने लगे। देवेश ने लंबी सांस लेकर छोड़ी। उसकी आंखें नैन्सी के बालों का तब तक पीछा करती रहीं, जब तक वो ओझल न हो गयी। देवेश उन बालों से उलझना चाहता था, उहें सहलाना चाहता था, पर नैन्सी ने उसे आरंभ से ही मना कर दिया था। उधर वो दोनों चले जा रहे थे। दोनों के दिमाग में देवेश था। दोनों मन में अतीत में कहे गए वाक्यों को दोहरा रहे थे। नैन्सी, तुम्हारा जीवन तुम्हारा है। उसमें फैसला लेने का हक भी तुम्हारा है, पर देवेश अच्छा लड़का है। सौरी सर, पर मैं अकेले रहना चाहती हूं। सिन्हा कुछ देर चुप रहे, फिर बोले- अकेले कब तक रहोगी। अकेले रहना बड़ा कष्ट देता है। आदमी का अकेलापन उसे न जाने किन अधेरी सुरंगों में भटकाया करता है। नैन्सी ने सिन्हा को देखा। उनकी बात का प्रमाण उनका चेहरा, उनका व्यक्तित्व दे रहा था। आगे का कुछ पता नहीं, पर फिलहाल मैं अकेली ही ठीक हूं। दोनों चुपचाप चले जा रहे थे, पर इस वापसी में नैन्सी के ऊपर कई अंधेरों की पर्तें जमा होने लगीं।

घर आकर वो यूं ही आइने के सामने खड़ी हो गई। शीशे में अट्टाइस साल का यौवन झिलमिला रहा था। काश मैं कुरुप होती, उसने कहा। देवेश क्या अब भी मेरा इंतजार कर रहा है। उसे लगा कि देवेश को ये खूबसूरती छल रही है। उसने मन में दो शब्द उभेरे, तुषार, देवेश। अतीत ने एक सम्मोहन कर दिया उसके ऊपर। वो छोटे- छोटे कदम तय करती अपनी अटैची तक जा पहुंची, जिसमें अतीत था, डायरियों के रूप में। सम्मोहित होकर वो मुस्कराने लगी। उस साल उसकी जिंदगी में तुषार था, सिर्फ वही। डायरी का हर पन्ना उसके नाम पर था। तुषार, घनी मूँछों वाला तुषार, घनी भाँहों वाला तुषार, चौड़े सिनें वाला तुषार। जिसका सपना आईएएस बनना था। लगातार दूसरी बार असफल हो जाने पर वो कितने गहरे डिप्रेशन में चला गया था। महीने भर में उसके चेहरे की रंगत बदल गई, आंखें गड़े में जाने लगीं, वो लाचार, मजबूर बन गया। नैन्सी को पता चला कि अब वो ढ़िंक भी लेने लगा है और तब नैन्सी ने एक फैसला लिया कि उसे अपने प्यार को फिर से सबल बनाना है। नैन्सी ने डायरी का वो पन्ना सहलाया जिस पर लिखा था- और आज... नैन्सी ने मन में वो बात पूरी की। और आज मैंने अपना तन भी तुषार को दे दिया, जिससे वो टूट कर गलत रास्ते पर न जा पाए। नैन्सी अब जोरें से रो पड़ी, जिस तुषार को उसने सब कुछ दिया, उसने नैन्सी को क्या दिया, क्या कहा था- नैन्सी आईएएस अफसर बनने के बाद मेरी लाइफ के दो पार्ट हो गए हैं। एक आईएएस बनने से पहले और दूसरा आईएएस बनने के बाद। और मैं इस दूसरे पार्ट में पहले पार्ट से कुछ न लाऊंगा। कह कर उसने फोन रख दिया था। नैन्सी रोए जा रही थी। इस तरह से जैसे कोई दूसरा काम ही न हो। पिछली रात बहुत देर तक नैन्सी का अतीत उसे बेधता रहा, उसे छीलता रहा। सुबह उसका सिर भारी था। वो धीरे धीरे अपनी दिनचर्या निपटाने लगी। अतीत से उबरने के लिए वो अपने आपको पूरी तरह अपनी रूटीन वर्क में खाली करने लगी। अतीत छलता है, समस्याएं देता है। न सुलझने वाली उलझने देता है, भटकता है। नैन्सी ये सब जानती थी। कई बार उसने कोशिश की, इससे दूर रहने की। पर हर बार कुछ ऐसा घट जाता जो उसे पीछे देखने को मजबूर करता। फिलहाल नैन्सी खुश रहने लगी, भूत और भविष्य से दूर केवल वर्तमान में। उहीं दिनों एक दिन चुपचाप उसने अपनी डायरियों आग में जला दीं। दिन बीतने लगे, मैदानों से ठंडे गायब हो रही थी। सिन्हा ने अखबार पर से एक नजर नैन्सी पर डाली। उसके चारों ओर एकांटर्स के आंकड़े थे। वो सोचने लगे कि बताऊं या न बताऊं। फिर बोल उठे, तुमने पढ़ा ? नैन्सी ने नजर उन पर डाली, नहीं। मेरा अखबार वाला शायद बीमार है। तीन दिन से नहीं पढ़ पाई। सिन्हा दुबारा बोले, तुम्हारे शहर में दंगा हो रहा है। मिली जुली आबादी वाले मोहल्लों में कुछ घर जला दिए गए हैं। नैन्सी फुर्री से उठी, पैपर की ओर लपकी और समाचार पढ़ने लगी। दिल की धड़कन तेज थी। जाने कहां से एक डर नसों में आ धमका था। सारे समाचार पढ़ने के बाद कांपती आवाज से बोले, हां ये सब हमारे मोहल्ले के आसपास ही का है। उसका डर आंखों से बहने लगा, वो वहीं जमीन पर बैठ गई। पैरों को



मोड़ कर सीने से चिपका लिया। न जाने क्या हुआ होगा...। सिन्हा को समझ में न आया कि क्या बोले ? उसकी आँखों में आसुओं के पार कुछ न दिखता था। ऐसे ही कुछ समय बीत गया। एक बार घर पर फोन करके पूछ लो। घर पर फोन...। जब मैं वहां थी, तभी घर को बेचने की बात चल रही थी। हमारे मोहल्ले में हम कुछ ही लोग रह गए थे। हो सकता है कि घर बिक गया हो। कहते हुए वो खड़ी हो गई, और न भी बिका हो तो फोन करने से क्या फायदा ? नैन्सी पीछे से छूटना चाहती थी, पर उसका ही कुछ उसे पीछे से मिलने को कह रहा था। नैन्सी दोराहे पर थी। उसने सिन्हा को देखा, क्या आदमी कभी अकेला रह सकता है ? उसे लगा कि वो भी बूढ़ी होती जा रही है, हाथ-पांव संभल नहीं रहे। क्या जड़ों को काटकर जीवन नहीं जिया जा सकता ?



सिन्हा बोले- तुम घर जाओ, मैं कर लूंगा ये सब। उसने बैग उठाया और लड़खड़ाते कदमों से बाहर आ गयी। फोन पर तुषार की बात सुनने के बाद नैन्सी को बड़ी पीड़ा हुई थी। ऐसी पीड़ा जो संसार से उसका मोह खत्म कर रही थी और उसे भीतर से मजबूत कर रही थी। छुई-मुई सी, कोमल और एक हद तक भावुक उस लड़की के गुण दबते जा रहे थे। वो लम्हा- लम्हा निश्चय कर रही थी कि अब वो अकेले रहेगी, सबसे अकेले, अपनी जड़ों को काटकर बिना किसी सहारे के। ये उस परिस्थिति की प्रतिक्रिया में एक जिद थी या उसका विश्वास ? ये जवाब उस समय न मिलता था, उस समय तो ये संकल्प था। पर घर में मां थी, वो रिश्ता सभी संकल्पों, जिदों से ऊपर बैठता है। मां की नंदू ने कभी मां को ये सब न बताया और एक दिन मां नहीं रहीं। नैन्सी की जिद को बहाना मिला था, उसने संकल्प को पूरा करने वाला अवसर। उसने घर छोड़ दिया, भाई-भाभी, भतीजे, भतीजियों और बीमार पिता को। नैन्सी ने सिफ़ इतना कहा था कि वो अपनी शक्ति पर जीना चाहती है। नैन्सी बिस्तर पर मुर्दे की तरह पड़ी, छत ताक रही थी। सब छोड़ने के बाद भी वो सब अपनी ओर क्यों बुला रहा है ? जड़ कटने के बाद फिर से जड़ कैसे जम रही हैं ? और अगर ये भाव मानवता के कारण हैं, तो उन सबके लिए क्यों नहीं जो दंगे में फंसे हैं। दंगे में तो कई परिवार फंसे होंगे, बहुतों के घर जले होंगे। अब नैन्सी सबके लिए सोचने लगी और तब मन भरकर जो आँख से बहावो आंसू सबके लिए थे। उन सबके लिए जो दंगे की भेंट चढ़े। एकाएक उसके मन की परिधि बढ़ने लगी।

संकीर्णता छलती है, भ्रमित करती है। सबके लिए सोचना कितना दिव्य अनुभव है। इस वृहद रूप में कितना आनंद है। नैन्सी सोचती जाती है, यही संकीर्णता तो मौत है, वरना जीवन अंतहीन है। मौत से एक शरीर के बाद दूसरा शरीर मिलता है और उस जीवन का भी श्रेष्ठ कर्म तो वही रहता है, उसकी अंतहीन होना, अंतहीन जीवन में मौत, दुख का डर नहीं होता। क्या लक्ष्य अंतहीन होना जीवन का पहला लक्ष्य नहीं होना चाहिए ? प्रश्न एक लक्ष्य की ओर संकेत करता था। धीरे-धीरे नैन्सी में एक बदलाव आ रहा था, जिसे सभी महसूस करते थे। स्कूल में, रास्तों पर, बाजार में घूमते नैन्सी को लगता कि सारे मनुष्य मूल रूप से एक ही हैं, सबमें बहुत भीतर एक ही तत्व है। शरीर से ही सब अलग दिखते हैं फिर किसी से क्या प्रेम, क्या ब्रह्म। तुषार का उससे अलग हो जाना, देवेश का उसे प्रेम प्रस्ताव रखना, सभी नैन्सी को एक जैसे ही लगते। वो सबसे और भी कोमल होती जा रही थी, पहले की ही तरह, पर भावुक नहीं, संवेदनशील। संवेदना सबसे लिए, सब लोगों के लिए। एक दिन देवेश नैन्सी के स्कूल आया, अपनी शादी का कार्ड देने। नैन्सी, आना जरूर, 17 तारीख को। जरूर आऊंगी। नैन्सी ने उस लाल कार्ड को देखा। देवेश, तुमने शादी का फैसला कर मेरा बोझ हल्का कर दिया। देवेश नैन्सी को देख रहा था, उतनी ही सुंदर, पर जाने का बदल गया था, उसकी सुंदरता देवेश की देह की वासना को जन्म न देती थी, बल्कि एक आत्मिक शर्ति पैदा करती थी। उसी दिन जब नैन्सी सिन्हा के घर पहुंची, वो ड्रिंक ले रहे थे। तो सिन्हा जब बेहद दुखी या परेशान होते हैं तभी पीते थे, ये बात वो जानती थी। क्या बात है सर ? वो कुछ चौंक गए, अभी ये ध्यान ही न था कि कोई आया है। उनके चेहरे पर पीड़ा थी, नैन्सी अब सहा नहीं जाता। मेरा अकेलापन मुझे किसी अंधेरी सुरंग में दफन कर देना चाहता है। बस मैं इतना चाहता था कि एक बार अपनी बेटी को देख लूं। नैन्सी कुछ समझे, कुछ नहीं परवो उसे फटी-फटी आँखों से देखते रहे।

आज रात कई दिन बाद वो छत पर टलहने आयी थी। वो सोचती कि आदमी की जड़ क्या है ? उसका परिवार, उसके दोस्त, उसकी आजीविका ? असल में आदमी की जड़ हैं गुण, जिन्हें अपनाकर वो आदमी बना, उसके ये अनिवार्य गुण ही उसकी जड़ हैं। इन्हें काटकर कोई मनुष्य, मनुष्य नहीं रह सकता। मैं भी इस जड़ से नहीं कट सकती। नैन्सी के तन, मन में एक नयी ताजगी थी। एक नई रचना के निर्माण के लिए आवश्यक वस्तुएं ही उसका उल्लास थीं। उसने अपने हाथ फैला दिए, क्षेत्रिज दिशा में, आँखें बंद कर लीं। बादलों के बीच, चतुर्थी का चांद था। दूर, उत्तर दिशा के पहाड़ों से, जो अब आसमां के विशाल सीने पर सर रख कर सो रहे थे, नीचे की ओर ठंडी, मध्यम हवा बहें लगी। उस हवा ने नैन्सी को सहलाना शुरू कर दिया। उसे लगा कि उसकी सभी गांठें खुलकर नीचे गिर रही हैं, वो हल्की होती जा रही है। नैन्सी के मन, मस्तिष्क, शरीर में एक ही लक्ष्य था, मैं जिंदगी तक जिंदा रहूंगी। जिंदगी के अंत तक मेरा अंत न होगा, मैं अंतहीन रहूंगी, अंतहीन।

श्री रामपूर्ति स्मारक

ट्रस्ट द्वारा

आयोजित कहानी

प्रतियोगिता 2002

में प्रथम स्थान

प्राप्त कहानी

# बढ़ेगा विद्यार्थियों का बौद्धिक ज्ञान



भारत की नई शिक्षा नीति 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट ने 29 अगस्त को मंजूरी दी गई है। इस नई शिक्षा नीति का मसोदा पूर्व इसरो प्रमुख के 0 कस्तुरीरंगन की अध्यक्षता में विशेषज्ञों की एक समिति ने तैयार किया है। शिक्षा नीति में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च

शिक्षा तक कई बड़े बदलाव किए गए हैं। दिनांक 20 जुलाई 2020 को एम.एच.आर.डी. मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति प्रस्तुत की है। इस नीति का लक्ष्य भारत को वैश्विक ज्ञान महासाक्षि बनाना है। नई शिक्षा नीति के अनुसार मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम को लागू किया जाएगा। आज की व्यवस्था में अगर चार साल इंजीनियरिंग पढ़ने या छह सेमेस्टर पढ़ने के बाद किसी कारणवश आगे नहीं पढ़ पाते हैं तो कोई उपाय नहीं होता लेकिन, मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम में एक साल के बाद सर्टिफिकेट, दो साल बाद डिप्लोमा और 3-4 साल के बाद डिग्री मिल जाएगी। यह स्टूडेंट्स के हित में एक बड़ा फैसला है।

नई शिक्षा नीति के अनुसार स्नातक में प्रवेश लेने के बाद पढ़ाई करना अनिवार्य नहीं होगा। नई शिक्षा नीति लागू होने के बाद स्नातक ती से चार साल तक होगा। इस बीच किसी भी तरह से अगर छात्र में छात्र पढ़ाई छोड़ता है तो उसका साल खराब नहीं होगा। एक साल तक पढ़ाई करने वाले छात्र को प्रमाणपत्र, दो साल पढ़ाई करने वाले को डिप्लोमा और कोर्स की अवधि पूरे करने वाले को डिग्री प्रदान की जाएगी। अगर कोई छात्र किसी कोर्स में एडमिशन लेना चाहे तो वो पहले कोर्स से एक खास निश्चित समय तक का ब्रेक ले सकता है और दूसरा कोर्स ज्वाइन कर सकता है और इसे पूरा करने के बाद फिर से पहले वाले कोर्स का ज्वाइन कर सकता है।

वर्तमान समय में सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज, डीम्ड यूनिवर्सिटी और स्टैंड अलोन इंस्टिट्यूशंस के लिए अलग अलग नियम हैं। नई एजुकेशन पॉलिसी 2020 में सभी के लिए समान नियम होंगे। देश में शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका में एनएसएफ (नेशनल साइंस फाउंडेशन) की तर्ज पर एक शीर्ष निकाय के रूप में एनआरएफ (नेशनल रिसर्च फाउंडेशन) की स्थापना की जाएगी। एनएसएफ की स्थापना का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालयों के माध्यम से शोध की संस्कृति को बढ़ावा देना है। यह स्वतंत्र रूप से सरकार द्वारा एक बोर्ड आफ गवर्नर द्वारा शासित होगा और बड़े प्रोजेक्टों की फाइनेंसिंग करेगा।

नई शिक्षा नीति के अनुसार स्कूली शिक्षा में सुधार करने के लिए, 10+2 बोर्ड संरचना को हटाकर 5+3+3+4 संरचना होगी। नए दिशा निर्देशों के अनुसार 5वीं तक यह प्री स्कूल होगा। 6 से 8वीं मिडिल स्कूल, 8 से 11 हाईस्कूल होगा। 12वीं से आगे ग्रेजुएशन होगा। 6वीं कक्षा के बाद छात्र व्यवसायिक पाठ्यक्रमों का चयन कर सकते हैं और 8वीं से 11वीं के छात्र अपनी पसंद के विषय चुन सकते हैं। अंततः नई शिक्षा नीति में शिक्षकों के साथ-साथ अधिभावकों को भी जागरूक करने पर जोर दिया जा रहा है। प्रत्येक छात्र की क्षमता को बढ़ावा देना प्राथमिकता है। वैचारिक समझ पर जोर दिया जाएगा। इससे रचनात्मकता को बढ़ावा मिलेगा।

**प्रो. (डा.) एकता रस्तोगी**

श्री राम मूर्ति स्मारक  
इंटरनेशनल बिजनेस स्कूल, लखनऊ



# आइडैप्टन कवच 2020 में एसआरएमएस सीईटी की टीम मेकबोट्स अवल



मुहम्मद आरिफ कुरैशी



कुशाग्र मोहन



चिरग मेरोत्रा



आशीष अग्रवाल (फेकल्टी)



प्रतियोगिता में विद्यार्थियों के राशन वैंडिंग मशीन डिजाइन को सर्वश्रेष्ठ माना गया

आईआईटी, एनआईटी, सीएसआईआर संस्थानों की करीब 2300 टीमों हुई थीं शामिल

**बरेली:** एसआरएमएस सीईटी के विद्यार्थियों की टीम मेकबोट्स ने आईआईटी, एनआईटी, सीएसआईआर जैसे प्रसिद्ध संस्थानों की करीब 2300 टीमों के बीच अवल स्थान प्राप्त किया। राशन वैंडिंग मशीन डिजाइन के उसके आइडिया को आइडैप्टन कवच 2020 प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ अंका गया। जजिंग पैनल में शामिल सीएसआईआर के निदेशक और फिलिप्स वर्ल्ड के पूर्व वैज्ञानिकों ने इसे सराहा और डिजाइन करने को कहा है।

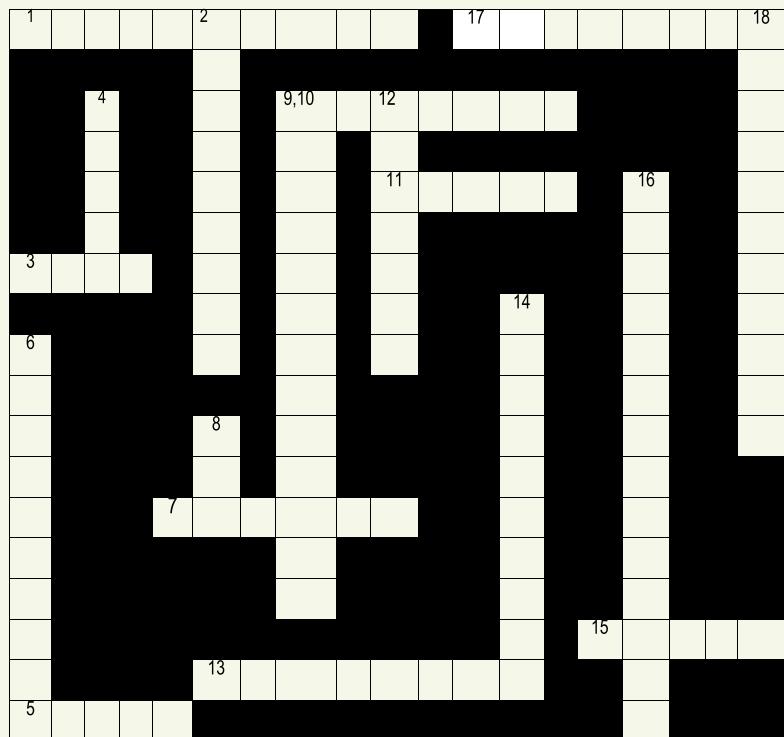
महामारी कोविड-19 से पूरी दुनिया में लगातार बदलाव हो रहे हैं। सोशल डिस्टैंसिंग, सैनिटेशन जैसे उपायों का पालन हर जगह हो रहा है। हालांकि बढ़ रहे संक्रमण से इसमें लापरवाही से भी इनकार नहीं किया जा सकता। कई बार अनजाने में लापरवाही खाद्यान्न वितरण के समय मौजूद लोगों से भी हो जाती है। यहां सोशल डिस्टैंसिंग का पालन नहीं हो पाता। इसी को ध्यान में रखते हुए एसआरएमएस सीईटी के विद्यार्थियों की टीम मेकबोट्स ने राशन वैंडिंग मशीन डिजाइन की बात कही। जिससे



वर्तमान पीपीएस प्रणाली में विभिन्न खामियों को दूर कर राशन की सही मात्रा का वितरण भी सुनिश्चित हो सके। मेकबोट्स टीम में शामिल चिरग मेरोत्रा, कुशाग्र मोहन और मुहम्मद आरिफ कुरैशी ने यह विचार आईआईएमटी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस मेरठ द्वारा आयोजित प्रतियोगिता आइडैप्टन कवच 2020 में पेश किया। एमएचआरडी के एमएसएमई विभाग द्वारा यह प्रतियोगिता कोविड-19

के खिलाफ लड़ने के लिए विचार और पोस्ट कोविड-19 युग में उत्तरजीविता का समर्थन करने के विचारों को जानने के लिए पांच दिनी प्रतियोगिता एक से पांच जून तक आयोजित की गई। वेबनार पर पांच दिन चले इस विमर्श में पांच फिल्टर राउंड हुए। इसमें आईआईटी, एनआईटी, सीएसआईआर और अन्य प्रसिद्ध संस्थानों और संगठनों की करीब 2300 टीमों ने भाग लिया। अलग-अलग पांच चरणों में आयोजित इस विमर्श के दूसरे दौर में 100 टीमें पहुंचीं। अंतिम पांचवें दौर के लिए दस टीमें चयनित हुईं। सभी का जजिंग पैनल के साथ वीडियो इंटरव्यू हुआ। जिसमें इनके आइडिया का, प्रस्तुति कौशल और विचार के आधार पर अंकलन किया गया। 29 जुलाई को इसका परिणाम घोषित हुआ। जिसमें एसआरएमएस सीईटी की टीम मेकबोट्स के राशन वैंडिंग मशीन डिजाइन के विचार को सर्वश्रेष्ठ माना गया। जजिंग पैनल में शामिल सीएसआईआर के निदेशक और फिलिप्स वर्ल्ड के पूर्व वैज्ञानिकों ने भी इसे सराहा। पैनल ने

इसे डिजाइन करने को कहा है। एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति और एसआरएमएस सीईटी के डीन प्रभाकर गुप्ता ने टीम मेकबोट्स में शामिल विद्यार्थी चिरग मेरोत्रा, कुशाग्र मोहन, मुहम्मद आरिफ कुरैशी और फैकल्टी आशीष अग्रवाल को बधाई दी। और प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ स्थान हासिल करने को गौरव बताया।



Crosswords No. 4

क्रॉस वर्ड एवं सुडोकू का  
परिणाम अगले अंक में देखें

Sudoku No. 4

5		8	6		2			4
	7					2	5	
					8			9
		7	9		3		4	
			4		5			
	2		1		7	9		
3			5					
	1	6					7	
7			2		1	8		3

**Horizontal**

1. It refers to isolation in stay.
3. Piece of cloth or other material, which you wear over your face
5. It is the definite test to detect COVID-19 infection
7. An secretion that may be contaminated with infectious organisms and serve in their transmission
9. Stands for novel coronavirus disease 2019
11. Symptoms of throat infection.
13. Common term for coinfection present with COVID.
15. Body temperature that is higher than normal
17. Disease outbreak that spreads across countries or continents

**Vertical**

2. Method for collecting a clinical test sample of nasal secretions
4. Sub-microscopic infectious agent
6. A machine designed to move air in and out of the lungs for a patient who is physically unable to breathe
8. Specialized agency of the united nations responsible for international public health
10. Research experiments on human participants



Answer: Crosswords No. 3

4	8	6	5	7	1	3	2	9
5	2	9	4	3	8	1	7	6
7	3	1	2	6	9	5	4	8
3	6	4	9	8	7	2	5	1
9	1	2	6	4	5	8	3	7
8	5	7	3	1	2	6	9	4
6	7	3	1	2	4	9	8	5
1	9	8	7	5	3	4	6	2
2	4	5	8	9	6	7	1	3

Answer: Sudoku No. 3

Effective adjunctive therapy for focal seizures

# LACOSET S

Lacosamide 50/100/150/200 mg Tablets

**ADDS** more seizure control  
more freedom  
more smiles

In painful diabetic and non-diabetic nerve pain

# MAXGALIN

PREGABALIN 50, 75, 150 mg Capsules

**Swift Action... Powerful Response**

The most powerful 1<sup>st</sup> line antipsychotic... Forever



# OLEANZ RT

Olanzapine Rapidly Dissolving Tablets 5/10/15/20 mg

Makes life easier for all schizophrenics

Accelerate recovery in stroke, head injury & other related disabilities

# STROCIT

Citicoline 500 mg + Piracetam 800mg

Plus

**PLUS effect in rehabilitation**